सत्संग - सरिता

श्री योग वेदान्त सेवा समिति
नाशिक

श्री योग वेदांत सेवा समिति, नाशिक.

द्वारा : [illegible] पटेल, १०८४, [illegible]
मेनरोड कॉर्नर, नाशिक - ४२[illegible]
फोन नं दुकान : ७३६४५ [illegible]

हेड ऑफिस
संत श्री आसारामजी आश्रम
[illegible] —श्री योग वेदांत [illegible]
अहमदाबाद - ३८० ००५
फोन नं ४८६३१०, ४[illegible]

संत श्री आसारामजी आश्रम
अहमदाबाद

अनुक्रमणिका

आरती - जय सदगुरु स्वामी	पान नं. १
आरती - आनंद मंगल करु आरती	पान नं. १
प्रार्थना - ॐ सह नाववतु	पान नं. २
चार युगके प्रथम दिन	पान नं. २
अजन्मा है अमर आत्मा(गितासार)	पान नं. ३
गुरुवन्दना - जय सदगुरु देवन देव	पान नं. ५
हम भारत देश के वासी है	पान नं. ६
आरती - ज्योत से ज्योत जगाओ	पान नं. ७
नाम किर्तन महिमा	पान नं. ८
परम सनेही संत	पान नं. ९
संत मिलन को जाईये	पान नं.१२
श्रीगुरु - गुणगानमाला	पान नं.१५
श्री गुरु गुर्वष्टकम	पान नं.१७
पूर्ण मदः पूर्ण मिद	पान नं.२०
हाथ जोड वंदन करु	पान नं.२१
बार - बार वंदना	पान नं.२२
गुरुनाम सहारा मेरा है	पान नं.२३
मुझे सद्गुरु का नाम ही प्यारा लगे	पान नं.२४

॥ हरी ॐ ॥

जय सदगुरु स्वामी ! ॐ जय सदगुरु स्वामी !
अधमोद्धारण प्रभूजी ! (२) नमीअेशीश नामी (टेक)
अलख निरंजन आप छो तमे अविनाशी, गुरु !
शुध्द स्वयंप्रकाशी ! (२) सहुना सुखराशी . . . . ॐ जय.
सच्चिदानंद स्वरुप शब्दातीत स्वामी, गुरु !
शब्दसुधारससिंधु ! (२) अविचल पदधामी . . . ॐ जय.
राम रुपे रमी रहया छो सर्व मही व्यापी, गुरु !
अनुपम रुप तमारुं ! (२) कोण सके पामी ? . . . . ॐ जय.
भवसागरमां बूडता जीव तारी लीधा, गुरु !
तत्वमसि समजावी ! (२) आप स्वरुप कीधा . . . . ॐ जय.
शंकर शुद्ध स्वरुप अे करुणा तारी, गुरु !
सकळ जगतमां सेवा ! (२) अेक ज सुखकारी . . . . ॐ जय.

ॐ श्री हरि ॐ

आनंद मंगल करु आरती, हरि गुरु संतन सेवा ॥

- प्रेम धरि ने म्हारे मंदिर पधारो२
  सुन्दर सुखडा लेवा . . . . व्हाला . . . .
- जेने आंगणे तुलसी नो क्यारों२
  सालिग्रामनी सेवा . . . . व्हाला . . . .
- अडसठ तीरथ संतो ना चरणे२
  गंगा - यमुना रेवा . . . . व्हाला . . . .
- संत मिले तो महासुख पावे२
  गुरुजी मिले तो सेवा . . . . व्हाला . . . .
- कहे प्रीतम जेने हरि है व्हाला२
  हरि ना जन हरिसेवा . . . . व्हाला . . . .

॥ प्रार्थना ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ।
गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम: ॥
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति : पूजामूलं गुरो : पदम ।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमुलं गुरो:कृपा ॥
अखण्ड अण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम: ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्व मम देव देव ॥
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम ।
एकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षिभूतम
भावतीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहे ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहे ॥
ॐ शांति : शांति : शांति

चार युगके प्रथम दिन

सतयुग - कार्तिक शुक्ल नवमी
त्रेतायुग - वैशाख शुक्ल तृतीया
द्वापरयुग - माघ कृष्ण अमावस्या
कलीयुग - भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी

अजन्मा है अमर आत्मा

व्यर्थ चिन्तित हो रहे हो, व्यर्थ डरकर रो रहे हो ।
अजन्मा है अमर आत्मा, भय में जीवन खो रहे हो ॥
जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा अच्छा ही है ।
होगा जो अच्छा ही होगा, यह नियम सच्च ही है ॥
अजन्मा है . . .

हुई भूली-भूलो का फिर, आज पश्चात्ताप क्यों ?
कल क्या होगा ? अनिश्चित है, आज फिर संताप क्यों ?
जुट पडो कर्त्तव्य में तुम, बाट किसकी जो रहे हो ?
अजन्मा है . . . .

क्या गया, तुम रो पडे ? तुम लाये क्या थे, खो दिया ?
है हुआ क्या नष्ट तुमने ? ऐसा क्या था, खो दिया ?
व्यर्थ ग्लानि से भरा मन, आँसुओं से धो रहे हो ॥
अजन्मा है . . . .

जो तुम्हारा आज है, कल वो ही था किसी और का ।
होगा परसों जाने किसका, यह नियम सरकार का ।
मग्न हो अपना समझना, दु:खों को संजो रहो हो ॥
अजन्मा है . . . .

जिसको तुम मृत्यु समझते, है वही जीवन तुम्हारा ।

॥ हरी ॐ ॥

है नियम जग का बदलना, क्या पराया क्या तुम्हारा ?
एक क्षण में कंगाल हो, क्षण बर में धन से मोह रहे हो ।
अजन्मा है . . . . .

मेरा - तेरा, बडा - छोटा, भेद ये मन से हटा दो ।
सब तुम्हारे तुम सभी के, फासले मन से हटा दो ।
कितने जन्मों तक करोगे, पाप कर तुम जो रहे हो ॥
अजन्मा है . . . . .

है किराया का मकान, ना तुम हो इसके, ना तुम्हारा ।
पंच तत्वों का बना घर, देह कुछ दिन का सहारा ।
इस मकान में हो मुसाफिर, किस कदर यों सो रहे हो ?
अजन्मा है . . . . .

उठो ! अपने आपको, भगवान को अर्पित करो ।
अपनी चिन्ता, शोक और भय, सब उसे अर्पित करो ।
है वो ही उत्तम सहारा, क्यूं सहारा खो रहे हो ?
अजन्मा है . . . . .

जब करो जो भी करो अर्पण करो भगवान को ।
सदा कर दो समर्पण, त्याग कर अभिमान को ।
मुक्ति का आनन्द अनुभव, सर्वदा क्यों खो रहे हो ?
अजन्मा है . . . . . .

॥ हरी ॐ ॥

- : गुरु वन्दना :-

जय सदगुरु देवन देव वरं , निज भक्तन रक्षण देह धरं ।
पर दुःख हरं सुख शांति करं , निरुपाधी निरामय दिव्य परं . . १
जय काल अबाधित शांतिमयं, जन पोषक शोषक ताप भयं ।
भय भंजन देत परम अभयं , मन रंजन भाविक भाव प्रियं . . . २
ममतादिक दोष नशावत है , शम आदिक भाव सिखावत है ।
जग जीवन पाप निवारत है , भवसागर पार उतारत है ३
कहुं धर्म बतावत ध्यान कहीं , कहुं भक्ति सिखावत ज्ञान कही ।
उपदेशत नेम अरु प्रेम तुम्ही , करते प्रभु योग अरु क्षेम तुम्ही . . ४
मन इन्द्रिय जाही न जान सके, नही बुध्दी जिसे पहचान सके ।
नही शब्द जहाँ पर जाय सके , बिनु सद्‌गुरु कौन लखाय सके . ५
नही ध्यान न ध्यातृ न ध्येय जहाँ , नहीं ज्ञातृ न ज्ञान न ज्ञेय जहाँ ।
नही देश न काल न वस्तु तहाँ , बिनु सदगुरु को पहुँचाया वहाँ . ६
नही रुप न लक्षण ही जिसका , नहीं नाम न धाम कही जिसका ।
नहीं सत्य असत्य कहाय सके , गुरुदेव ही ताही जनाय सके . . ७
गुरु कीन कृपा भव भास गई , मिट भूख गई छुट प्यास गई ।
नहीं काम रहा नहीं कर्म रहा , नहीं मृत्यु रहा नहीं जन्म रहा . . . ८
भग राग गया हट द्वेष गया, अध चूर्ण भया अणु पूर्ण भया ।
नही द्वैत रहा सम एक भया , भ्रम भेद मिटा मम तोर गया . . . ९
नहीं मै नही तू नही अन्य रहा , गुरु शाश्वत आप अनन्य रहा ।
गुरु सेवत ते नर धन्य यहाँ , तिनको नहीं दुःख यहाँ न वहाँ . .१०

॥ हरी ॐ ॥

हम भारत देश के वासी हैं . . . .

हम भारत देश के वासी हैं ।
हम ऋषियों की संतानें है ।
हम जगद्गुरु के बालक है ।
हम परम गुरु के बच्चे है ॥
हम देवभूमि के वासी हैं ।
हम सोऽहं नाद जगायेंगे ।
हम शिवोऽहं शिवोऽहं गायेंगे ।
हम नयी चेतना लायेंगे ॥
हम भारत देश के . . .
हम संयमी जीवन जीयेंगे ।
हम भारत महान बनायेंगे ।
हम प्रभु के गीत गायेंगे ।
हम दिव्य शक्ति बढायेंगे ।
हम भारत देश के . . . .
हम भारत भरमें घूमेंगे ।
हम गुरु संदेश सुनायेंगे ।
हम आत्म - जागृति पायेंगे ।
हम नयी रोशनी लायेंगे ।
हम भारत देश के . . . . .
हम गुरु का ज्ञान पचायेंगे ।
हम बडभागी हो जायेंगे ।
हम जीवन्मुक्ति पायेंगे
हम गुरु की शान बढायेंगे ॥
हम भारत देश के . . . .

॥ हरी ॐ ॥

ज्योत से ज्योत जगाओ . . . . .

ज्योत से ज्योत जगाओ सदगुरु ।
ज्योत से ज्योत जगाओ ॥
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ सदगुरु ।
ज्योत से ज्योत जगाओ ॥

हे योगेश्वर ! हे परमेश्वर !
हे ज्ञानेश्वर ! हे सर्वेश्वर !
निजकृपा बरसाओ सदगुरु । ज्योत से.

हम बालक तेरे द्वारपे आये,
मंगल दरस दिखाओ सदगुरु । ज्योत से.

शीश झुकाय करें तेरी आरती,
प्रेमसुधा बरसाओ सदगुरु । ज्योत से.

साची ज्योत जगे जो हृदय में,
सोऽहं नाद जगाओ सदगुरु । ज्योत से.

अन्तंर में युग युग से सोई ,
चितिशक्ति को जगाओ सदगुरु । ज्योत से.

जीवन में श्रीराम अविनाशी ,
चरनन शरन लगाओ सदगुरु । ज्योत से.

॥ हरी ॐ ॥

नाम - कीर्तन महिमा

सर्वधर्मबहिर्भूतः सर्वपापरतस्तथा ।
मुच्यते नात्र सन्देहो विष्णोर्नामानुकीर्तनात् ॥१॥

सर्वधर्मत्यागी और सर्वपापनिरत पुरुष भी यदि हरिनाम कीर्तन करता है तो वह पापों से छूट जाता है इसमें कोई सन्देह नहीं है । (१)

तीर्थानां च परं तीर्थं कृष्णनाम महर्षयः ।
तीर्थी कुर्वन्ति जगतीं गृहीतं कृष्णनाम यैः ॥२॥

हे ऋषियों ! समस्त तीर्थे में बडा तीर्थ कृष्णनाम है । जो लोग श्रीकृष्णनाम का उच्चरण करते हैं वे सम्पूर्ण जगत को तीर्थ बना देते हैं । (२)

सत्वशुद्धिकरं नाम नाम ज्ञानप्रदं स्मृतम् ।
मुमुक्षुणां मुक्तिप्रदं कामिनां सर्व्वकामदम् ॥३॥

सचमुच, हरि का नाम मनुष्यों की शुद्धि करनेवाला, ज्ञान प्रदान करनेवाला, मुमुक्षुओं को मुक्तिदेनेवाला और इच्छुकों की सर्व मनोकामना पूर्ण करनेवाला है । (३)

सर्वमंगलमांगल्यं आयुष्य वयाधिनाशनम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं दिव्य वासुदेवस्य कीर्तनम् ॥४॥

श्रीकृष्ण का कीर्तन सर्व प्रकार से मंगलकारी आयुष्य के लिए शुभ, व्याधियों का नाश करनेवाला, भोग और मोक्ष प्रदान करे ऐसा दिव्य है । (४)

गीतायाः श्लोकपाठेन गोविन्दस्मृतिकीर्तनात् ।
साधुदर्शनमात्रेण तीर्थ कोटिफलं लभेत् ॥५॥

॥ हरी ॐ ॥

गीता के श्लोक के पठन से, श्रीकृष्ण के स्मरण और कीर्तन से तथा संत के दर्शन मात्र से करोडों तीर्थों का फल प्राप्त होता है । (५)

जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना । श्रवन रंध्र अहितभवन समाना ॥
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा । लोचन मोरपंख कर लेखा ॥
ते सिर कटु तुंबरी समतूला । जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी । जीवत सव समान तेइ प्रानी ॥
जो नहि करइ राम गुन गाना । जीह सो दादुर जीह समाना ॥
कुलिस कठोर निटुर सोइ छाती । सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥
सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा । दीप सिखा सोई परम प्रचंडा ॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा । तब भव मूल भेद भ्रम नासा ॥

'परम सनेही संत . . . .'

स्वर्ग मृत्यु पाताल में पूर तीन सुख नाँहि ।
सुख साहिब के भजन में अरु संतन के माँहि ॥१॥
संतन ही में पाईये राम मिलन कौं घाट ।
सहजैं ही खुलि जात है 'सुंदर' हृदय कपाट ॥२॥
संत मुक्ति के पोरिया तिनसों करियो प्यार ।
कूँची उनके हाथ है 'सुंदर' खोलहि द्वार ॥३॥
'सुंदर' आये संत जन मुक्त करन को जीव ।
सब अज्ञान मिटाइ करि करत जीव तैं शिव ॥४॥

संतन की सेवा किये हरि की सेवा होय ।
तातैं 'सुंदर' एक ही मति करि जानै दोय ॥५॥
सहजो भज हरिनाम को छांडी जगत का नेह ।
अपना तो कोई है नहीं अपनी सगी न देह ॥६॥
पातक उपपातक महा जेते पातक और ।
नाम लेत तत्काल सब जरत खरत तेहि ठौर ॥७॥
तिमिर गया रवि देखते कुमति गई गुरुज्ञान ।
सुमति गई अति लोभ से भक्ति गई अभिमान ॥८॥
जैसी प्रीति कुटुम्ब की तैसी गुरु सों होय ।
कहैं कबीर ता दास को पाला न पकडै कोय ॥९॥
जो केय निन्दे साध को संकट आवै सोय ।
नरक जाय जनमै मरै मुक्ति कबहुँ नहीं होय ॥१०॥
बहुत पसारा मत करो कर थोडे की आस ।
बहुत पसारा जिन किया तेई गये निराश ॥११॥
कपटी मित्र न कीजिए पेट पैठि बुधि लेत ।
आगे राह दिखाय के पीछे धक्का देत ॥१२॥
कोटि करम लागे रहै एक क्रोध की लार ।
किया कराया सब गया जब आया हंकार ॥१३॥
अपना तो कोई नहीं देका टोकि बजाय ।
अपना अपना क्या करे मोह भरम लपटाय ॥१४॥
दीप कूँ झोला पवन है नर कूँ झोला नारि ।
ज्ञानी झोला गर्व है कहैं कबीर पुकारि ॥१५॥
दोष पराया देखि करि चले हसन्त हसन्त ।

आपना याद न आवई जा का आदि न अन्त ॥१६॥
लोभ मूल है दुःख को लोभ पाप को बाप ।
लोभ फँसे जे मूढजन सहैं सदा संताप ॥१७॥
दरसन को तो साधू हो सुमिरन को गुरुनाम ।
तरने को आधीनता डूबन को अभिमान ॥१८॥
सुख देवे दुःख को हरे करे पाप का अंत ।
कह कबीर वे कब मिलें परम सनेही संत ॥१९॥
तीरथ नहाये एक फल संत मिले फल चार ।
सद्गुरु मिले अनन्त फल कहे कबीर विचार ॥२०॥
आवत साधु न हरखिया जात न दीना रोय ।
कहैं कबीर वा दास की मुक्ति कहाँ ते होय ॥२१॥
साधु मिले साहिब मिले अन्तर रही न रेख ।
मानसा वाचा कर्मणा साधु साहिब एक ॥२२॥
कोटि कोटि तीरथ करैं कोटि कोटि करु धाम ।
जब लग साधु न सेवई तब लग काचा काम ॥२३॥
अडसठ तीरथ जो फिरै कोटि यज्ञ व्रत दान ।
'सुंदर' दरसन साधु कै तुलै नहीं कुछ आन ॥२४॥
मैं अपराधी जनम का नका सिख भरा विकार ।
तुम दाता दुःख भंजना मेरी करो सँभार ॥२५॥
सुरति करो मेरे सांईया हम है भवजल मांहि ।
आपे ही बहि जाएंगे जो नीहं पकरो बँहि ॥२६॥

संत मिलन को जाइये

दुर्लभो मानुषो देहो देहीनां क्षणभंगुरः ।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रिय दर्शनम् ॥१॥

मनुष्य देह मिलना दुर्लभ है । वह मिल जाय फिर भी वह क्षणभंगूर है । ऐसे क्षणभंगुर मनुष्य देह में भी भगवान के प्रिय संतजनों का दर्शन तो उससे भी अधिक दुर्लभ है । (१)

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगीनां हृदये न वै ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामी नारद ॥२॥

हे नारद ! कभी मैं वैकुण्ठ में भी नहीं रहता, योगियों के हृदय का भी उल्लंघन कर जाता हूँ परंतु जहाँ मेरे भक्त कीर्तन करते हैं वहा मैं आवश्य रहता हूँ । (२)

कबीर सोई दिन भला जा दिन साधु मिलाय ।
अंक भरै भरि भेटिये पाप शरिरां जाय ॥१॥
कबीर दरशन साधु के बडे भाग दरशाय ।
जो होवै सूली सजा काटैं इ टरी जाय ॥२॥
दरशन कीजे साधु का दिन में कई कई बार ।
आसेजाका मेह ज्यों बहुत करै उपकार ॥३॥
कई बार नहीं करि सकै दोय बखत करि लेय ।
कबीर साधू दरस ते काल दगा नहीं देय ॥४॥
दोय बखत नहीं करि सकै दिन में करु इक बार ।
कबीर साधु दरस ते उतरे भौ जल पार ॥५॥

दूजै दिन नहिं करि सकै तीजै दिन करु जाय ।
कबीर साधू दरस ते मोक्ष मुक्ति फल पाय ॥६॥
तीजे चौथे नहीं करै सातै दिन करु जाय ।
या मैं विलंब न कीजिये कहै कबीर समुझाय ॥७॥
सातै दिन नहीं करि सकै पाख पाख करि लेय ।
कहे कबीर सो भक्तजन जनम सुफल करि लेय ॥८॥
पाख पाख नहीं करि सकै मास मास करु जाय ।
ता मैं देर न लाइये कहै कबीर समुझाय ॥९॥
मात पिता सुत इस्तरी आलस बन्धु कानि ।
साधु दरस को जब चलै ये अटकावै खानि ॥१०॥
इन अटकाया ना रहै साधू दरस को जाय ।
कबीर सोई संत जन मोक्ष मुक्ति फल पाय ॥११॥
साधु चलत रो दीजिये कीजै अति सनमान ।
कहै कबीर कछु भेंट धरुँ अपने बित अनुमान ॥१२॥
तरुवर सरोबर संतजन चेथा वरसे मेह ।
परमारथ के कारणे चारों धरिया देह ॥१३॥
संत मिलनेको जाइये तजी मोह माया अभिमान ।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे कोटि यज्ञ समान ॥१४॥
तुलसी इस संसार में भांति भांति के लोग ।
हिलिये मिलिये प्रेम सों नदी नाव संयोग ॥१५॥

॥ हरी ॐ ॥

चल स्वरुप जोबन सुचल चल वैभव चल देह ।
चलाचली के वक्त में भलाभली कर लेह ॥१६॥
सुखी सुखी हम सब कहें सुखमय जानत नहीं ।
सुख स्वरुप आतम अमर जो जाने सुख पाहिं ॥१७॥
सुमिरन ऐसा कीजिये करे निशाने चोट ।
मन ईश्वर में लीन हो हले न जिह्वा होठ ॥१८॥
दुनिया कहे में दुरंगी में पलटी हो जाऊँ ।
सुख में जो सोये रहे वा को दुःखी बनाऊ ॥१९॥
माला श्वासोच्छ्वास की भगत जगत के बीच ।
जो फेरे सो गुरुमुखी ना फेरे सो नीच ॥२०॥
अरव खरव लों धन मिले उतय अस्त लों राज ।
तुलसी हरि के भजन बिन सबके नरक को साज ॥२१॥
साधु सेव जा घर नहीं सतगुरु पूजा नहीं ।
सो घर मरघट जानिये भूत बसै तेहि मांहीं ॥२२॥
निराकार निज रुप है प्रेम प्रिती सों सेव ।
जो चहे आकार को साधू परतछ देव ॥२३॥
साधू आवत देखि के चरणी लागौं धाय ।
क्या जानौं इस भेष में हरि आपै मिल जाय ॥२४॥
साधू आवत देख करि हसि हमारी देह ।
माथा का ग्रह उतरा नैनन बढा सनेह ॥२५॥

॥ हरी ॐ ॥

श्रीगुरु - गुणगानमाला

कर लेता इक पल भी, जो सद्गुरु का ध्यान ।
उसका तो बन जाय है , जीवन स्वर्ग समान ॥१॥
भजन बिना सब झूठ है, सत्य को तू अपनाय ।
इस जग में रहकर सदा, सद्गुरु के गुण गाय ॥२॥
कुछ भी ना देगा तुझे , यह सारा संसार ।
भवसागर ते तारेगा , सद्गुरु का दरबार ॥३॥
सद्गुरु के दरबार से , सच्ची चाह लगाय ।
झूठी दुनियाँ छोड के , सच्चे धन को पाय ॥४॥
मन चाहा मिल जायेगा , चल गुरु के दरबार ।
बडे दयालु सद्गुरु है , भर देंगे भंडार ॥५॥
सब नाते झूठे यहाँ , सच्चा गुरु का प्यार ।
गुरुदेव का प्यार ही , जीवन का आधार ॥६॥
माटी का तू ठेर है, इक दिन माटी होय ।
जाने तू इस बात को, फिर क्यों मोंह में खोय ॥७॥
टूटेगी पल में तेरी, सांसों की ये डोर ।
कभी नहीं चलता यहाँ, काल पे किसी का जोर ॥८॥
बंदे तू ये जान ले, वाणी हे अनमोल ।
कटु वचन को छोड दे, मीठी वाणी बोल ॥९॥
प्रभु के कई कई रुप है , गुरु को सत्य है मान ।
गुरु चरणों में जाइये , छूटेगा अज्ञान ॥१०॥

क्यूं करता बरबाद यूं , नैनों का तू नीर ।
हर लेगें गुरुदेव सभी, तेरे मन की पीर ॥११॥
ब्रह्मा विष्णु महेश हैं । गुरु की ही पहचान ॥१२॥
जो मांगों मिल जायेगा , श्रध्दा सच्ची होय ।
सद्‌गुरु के दरबार से, खाली गया न कोय ॥१३॥
सच्चे मन से ध्यान धर , ले सद्‌गुरु का नाम ।
संशय दूर भगाइयें , पुरे होंगे काम ॥१४॥
तैंतीस कोटि देवता , सारे बाँचे हाथ ।
हम सब के गुरुदेव हैं , अनाथों के नाथ ॥१५॥
ले सद्‌गुरु का ही आसरा , सारी चिन्ता छोड ।
सद्‌गुरु दौडे आयेंगे , अपना आसन छोड ॥१६॥
सद्‌गुरु के दरबार में , सब हैं एक समान ।
भेदभाव से किसी की भी , यहाँ नहीं पहचान ॥१७॥
बार-बार लेते जनम , मरते बारंबार ।
एकबार गुरु शरण गहो , हो जाओगे पार ॥१८॥
सद्‌गुरु परमानन्द है, आनन्द अमृत नाम ।
जो वा की सेवा करे , हो जाये निष्काम ॥१९॥
जिसके घर से दीन जन, खाली हाथ न जाय ।
सद्‌गुरु के भंडार सें , वों भी सब कुछ पाय ॥२०॥
गुरु-आश्रम की देख लो, अद्‌भूत अनुपम शान ।
खडे द्वार पर हँस रहे , सांई आसाराम ॥२१॥

सांई से उसको मिले , जिसकी सच्ची प्रीत ।
दुनियाँ में होती सदा , गुरु - भक्ती की जीत ॥२२॥
छोड बुराई दंभ कों , लोभ मोह अभिमान ।
मिलने को आतुर सदा, श्रीसद्‌गुरु भगवान ॥२३॥
हर इक सांस में हो तेरे , गुरुमंत्र का नाम ।
ऐसा कर ले तू जतन , व्यर्थ ना जाए प्राण ॥२४॥
दास की इतनी विनती , चाहे हम कल्याण ।
गुरुसेवा में अर्पित रहे , तन मन धन और प्राण ॥२५॥

श्रीमद् आद्य शंकराचार्यविरचितम्

॥ गुर्वष्टकम् ॥

शरीरं सुरुपं तथा वा कलत्रं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः कि ततः किम् ॥१॥

यदि शरीर रुपवान हो, पत्नी भी रुपसी हो और सत्कीर्ति चारों दिशाओं में विस्तरित हो, मेरु पर्वत के तुल्य अपार धन हो, किन्तु गुरु के श्रीचरणों में यदी मन आसक्त न हो तो इन सारी उपलब्धियों से क्या लाभ ?

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं
गृहं बान्धवा : सर्वमेतद्धि जातम् ।
मनश्चेन्न लग्न गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥२॥

सुन्दरी पत्नी, धन, पुत्र-पौत्र, घर एवं स्वजन आदि प्ररब्ध से सर्व सुलभ हो किन्तु गुरु के श्रीचरणो में मन की आसक्ति न हो तो इस प्रारब्ध - सुख से क्या लाभ ?

षंडगादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ।
मनचश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥३॥

वेद एवं षट्वेदांगादि शास्त्र जिन्हे कंठस्थ हो, जिनमें सुन्दर काव्य-निर्माण की प्रतिभा हो, किन्तु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो इन सद्गुणों से क्या लाभ ?

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दै :
सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।
मनश्चेन्न लग्न गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥५॥

जिन महानुभाव के चरणकमल प्रृथ्वीमण्डल के राजा - महाराजाओं से नित्य पजित रहा करते हों किन्तु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों में आसक्त न हो तो इस सद्भाग्य से क्या लाभ ?

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्
जगद्वस्तु सर्वं करे सत्प्रसादात् ।
मनश्चेन्न लग्न गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥६॥

दानवृत्ति के प्रताप से जिनकी कीर्ति दिग्गिन्तरों में व्याप्त हो, अति उदार गुरु की सहज कृपा-दृष्टीसे जिन्हे संसार के सारे सुख - ऐश्वर्य हस्तगत हो, किन्तु उनका मन यदि गुरु के श्रीचराणो में आसत्तिभाव न रखता हो तो इन सारे ऐश्वर्यां से क्या लाभ ?

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।
मनश्चेन्न लग्न गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥७॥

जिनका मन भोग, योग, अश्व, राज्य, स्त्रीसुख और धनोपभोग से कभी विचलित न हुआ हो, फिर भी गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न बन पाया हो तो इस मन की अटलता से क्या लाभ ?

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये ।
मनश्चेन्न लग्न गुरोरंघिद्रपद्मे
ततः किं ततः किं ततः कि ततः किम् ॥८॥

जिनका मन वन या अपने विशाल भवन में, अपने कार्य या शरीर में तथा अमूल्या भंडार में आसक्त न हो, पर गुरु के श्रीचरणों मे भी यदि वह मन आसक्त न हो पाये तो उसकी सारी अनासत्तियों का क्या लाभ ?

|| हरी ॐ ||

अन्यध्याँणि रत्नादि मुक्तानि सम्यक्
समालिंगिता कामिनी यामिनीषु ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघिद्रपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥९॥

अमूल्य मणि मुक्तादि रत्न उपलब्ध हों, रात्रि में समालिगिता विलासिनी पत्नी भी प्राप्त हो, फिर भी मन गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न बन पाये तो इन सारे ऐश्वर्यभोगादि सुखों से क्या लाभ ?

गुरोरष्टकं यः पठेतपुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
लभेत् वांछितार्थ पदं बह्मसंज्ञं
गुरोरुक्त्वाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥१०॥

जो यती, राजा, ब्रह्मचारी एवं गृहस्थ इस गुरु-अष्टक का पठन पाठन करता है और जिसका मन गुरु के वचन में आसक्त है, वह पुण्यशाली शरीरधारी अपने इच्छितार्थ एवं ब्रह्मपद इन दोनों को सम्प्राप्त कर लेता है यह निश्चित है ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

|| हरी ॐ ||

हाथ जोड वंदन करुं . . .

हाथ जोड वंदन करुं
धरु चरण पे शीश
ज्ञान भक्ति मोहे दिजीये
परम पुरुष जगदीश ।

सदगुरु दीना आपने
भेट धरु क्या नाथ
नमस्कार की भेट धरु
जोडु मै दोनों हाथ ।

दुःख रुप संसार ये
जन्म मरण की खाण
आप निकालो दया करो
सदगुरु दिन दयाल

प्रेमभक्ति देना हमे
हे प्रेमा अवतार
हे करुणा अवतार
तुम हो गगन के चंद्रमा
हम है धरा की धूळ . . . .

बार बार वंदना . . . .

भक्तो के भगवान को बार बार वंदना - २
बार बार बंदना , हजार बार बंदना
मेरे गुरुदेव को बार बार बंदना
राधा के श्याम को बार बार बंदना
शबरी के राम को बार बार बंदना ॥
बार बार बंदना , हजार बार बंदना
मेरे गुरुदेव को बार बार बंदना
मीरा जैसी भक्ति हमे देना
शबरी जैसी प्रिती हमे देना
सद्‌गुरु अपनी भक्ति देना
आपके चरणोंमे बार बार बंदना
बार बार बंदना , हजार बार बंदना
तुम ही मेरे ब्रम्हा हो तुम ही मेरे विष्णु - (२)
तुम ही शिवशंकर हो गुरुदेवा
आपके चरणोंमे बार बार बंदान
मंगलमूर्ती को बार बार बंदना
बार बार बंदना हजार बार बंदना . . . . .

गुरु नाम सहारा मेरा है . . .

गुरुनाम सहारा मेरा है - (२)
मेरा और सहारा कोई नही
गुरु सेवा सहारा मेरा है
गुरु पूजा सहारा मेरा है
गुरु भक्ति सहरा मेरा है
गुरु मंत्र सहारा मेरा है
मेरा और सहारा कोई नही
हरि ॐ . . . . हरि ॐ . . .

हरिनाम सहारा मेरा है
गुरुकृपा सहारा मेरा है
भगवान सहारा मेरा है
मेरा और सहारा कोई नही
हरि ॐ . . . . हरि ॐ . . . .

सदगुरु तुम्हारी जय जय हो
गुरुनानक तुम्हारी जय जय हो
गुरुवाणी तुम्हारी जयजय हो
हरि ॐ हरि ॐ

॥ हरी ॐ ॥

'' ॐ नमोः श्री सदगुरुः परमात्मने नमः ॐ ''

मुझे सदगुरु का नाम ही प्यारा लागे
मुझे झूठा ही झूठा ये संसार लागे,
साई साई नाम जपे है जो नर आठे याम
उसके दुखडे दूर करे , जय जय आसाराम
गुरुनाम में सफल जिंदगानी लागे,
मुझे झूठा ही झूठा . . . .
पार्वती जी माता मेरी , पिता भोलेनाथ ,
इन दोनों के चरणों में हो बारंबार प्रणाम,
भोलेनाथ में सफल जिंदगानी लागे ,
मुझे झूठा ही झूठा . . . .
सीता सीता नाम जपे है , जो नर आठो याम
उसके दुःखडे दूर करे है, जय जय सीताराम
सीताराम में सफल जिंदगानी लागे,
मुझे झूठा ही झूठा . . . .
लक्ष्मी देवी माता मेरी , पिता आशाराम
इन दोनों के चरणोंमे हो बारंबार प्रणाम
इनकी पूजा में सफल जिंदगानी लागे,
मुझे झूठा ही झूठा ये संसार लागे !

सत्संग

हर रविवार और गुरुवार

रविवार :- भाई और बहनोंके लिये
स. ७.३० से ९.३०
व्हिडिओ / ऑडिओ सत्संग

गुरुवार :- सिर्फ बहनोंके लिए
सांज :- ४ से ६
व्हिडिओ / ऑडिओ सत्संग

सत्संग हॉल: श्री योग वेदांत सेवा समिती नाशिक
लेऊआ पाटीदार समाज ट्रस्ट हॉल,
गंगाघाट, अहिल्याराम व्यायाम शाळेसमोर,
पंचवटी नाशिक - ४२२ ००३.

प्रकाशक :- श्री योग वेदांत सेवा समिती, नाशिक.
द्वारा - नटूभाई गाविंदजी पटेल,
१०८४, चांदवडकर लेन, मेनरोड कॉर्नर,
नाशिक - ४२२ ००१.
फोन नं. दुकान - ७४६४५, घर ७१९४१